कन्यादान किसका और क्यों

वैदिक काल से ही यह प्रथा चली आ रही है कि कन्या के विवाह के समय माता पिता कन्यादान की रस्म करते हैं। पंडित विधि-विधान से यह रस्म करवाते थे। जिसका अर्थ यह है कि माता पिता ने जन्म देकर बीस-पच्चीस साल तक पाल पोस कर, पढ़ा-लिखा कर कन्या को बढ़ा किया और फिर विवाह करके किसी अनजान व्यक्ति को हमेशा- हमेशा के लिए दान कर दिया। कन्या के जन्म लेते ही माता-पिता उसको पराया धन समझकर पालते पोसते थे इसलिए बेटे की तुलना में उसके पालन पोषण में कमी रखी जाती है।बचपन से बेटी के मन मस्तिष्क में यह बात बैठा दी

जाती थी कि तुम पराया धन हो, तुम्हें ससुराल जाना है। ऐसा मत करो वैसा मत करो, और फिर विवाह के बाद विदाई के शब्द तो बेटी के हृदय को विद्दीर्ण करने वाले होते थे। बेटा- डोली हमारे घर निकली है अब अर्थी ससुराल से निकलनी चाहिए। उस समय किसी ने यह सोचने की कोशिश भी न की होगी कि ऐसे शब्दों से लड़की पर क्या बितती होगी। एक ही पल में उस परिवार से रिश्ता खत्म हो गया। आँखें खोलते ही जिस परिवार को देखा था। वह कितनी असहाय और अकेला महसूस करती होगी,किसी ने नहीं सोचा होगा।

साहित्य रत्न जुलाई2023

अब जब वह ससुराल आ जाती है। तब शुरू होता है उसके जीवन का दर्दनाक अध्याय। अनजान और नये लोगों के बीच उनके हुक्म का पालन करती हुई, सभी तरह के अत्याचारों को सहती है पर शिकायत किस से करें ? माता पिता ने तो दान कर दिया है। अब इस दुनिया में उसका अपना है कौन ? माता-पिता ने तो विदाई के वक्त ही कह दिया था कि तेरी अर्थी ही ससुराल से निकलनी चाहिए।

एक समय ऐसा आता है कि वह अत्याचार सहते सहते थककर प्यार को तरस जाती है। उससे कोई दो मीठे बोल बोलने वाला भी नहीं होता है। वह टूट जाती है। उसे लगता है कि अब इस संसार में उसका कोई नहीं है। आखिर होती तो वह भी बीस-पच्चीस साल की बच्ची ही है। तब उसे एक ही रास्ता नजर आता है आत्महत्या।

इस तरह घुट- घुट के जीने से तो अच्छा है कि अपना जीवन ही समाप्त कर दूँ ,और फिर मेरे रहने या न रहने से किसी को क्या फर्क पड़ेगा । मुझे तो दान कर दिया गया है और इन्हीं विचारों में डूबे रहकर एक दिन वह अपनी जीवन लीला समाप्त कर देती है।

अब प्रश्न यह उठता है कि विवाह के समय बेटी का कन्यादान क्यों किया जाता है, क्या बेटी कोई वस्तु है,या पशु है ? जिसका हम दान कर देते हैं। हम पुरानी मान्यताओं को आँख बंद करके आत्मसात करते चलते हैं। कभी पलट कर नहीं सोचते कि हम जो कर रहे हैं।

उसमें कितनी वैज्ञानिकता है। अपने अंग को कोई कैसे दान कर सकता है। विवाह करना तो उचित है पर दान करना कहां का औचित्य है।

विदाई के समय माता-पिता को कहना चाहिए बेटा हमने तुम्हारे गृहस्थ जीवन के लिए तुम्हारा विवाह किया है। तुम्हारा दान नहीं किया है। तुम कभी परायी नहीं हो सकतीं। तुम हमारे जिगर का टुकड़ा हो, हमारी बेटी हो और हमेशा रहोगी।

जब कभी तुम्हें दर्द हो, तो हमें तुरंत सूचित करना हम दौड़े चले आएगें, पर गृहस्थ जीवन में प्रवेश करने के लिए तुम्हें अपना अलग घर बसाना होगा। हम हर पल तुम्हारे साथ हैं। जब इस तरह का संबल बेटी को मिलेगा तो वह विवाह के बाद भी कभी अकेला महसूस नहीं करेगी। वह अपना दर्द माता- पिता के साथ बाँटेगी और आत्महत्या का विचार तो उसके ख्यालों में भी नहीं आयेगा।

कोई अपने विचार किसी पर जबरदस्ती नहीं थोप सकता है।

अब यह अपना-अपना विचार है कि कन्यादान करना चाहिए या नहीं, पर मैं अपनी जुड़वा बेटियों का दान कभी नहीं करूँगीं। उपवास रख कर ईश्वर से उनके सुखद वैवाहिक जीवन की कामना करूँगीं। अब फैसला आपके हाथों में है कि आप कन्यादान करना चाहते हैं या संस्कार दान।

डॉ. निशा नंदिनी भारतीय

तिनसुकिया, असम